6

अपने आपको शिष्टतापूर्वक और विचारशीलता से सजाओ (1 पतरस 3:1-7)

कितनी अजीब विडम्बना है कि स्त्री पुरुष में समानता की इस पीढ़ी की सैनिक प्रोत्साहन का प्रमाण आमतौर पर जीतने पर पराजित ही होता है! नर नारी ''समान'' नहीं है। यह सच है कि स्त्रियों के बच्चे और पुरुष युद्ध में जाते हैं। समानता के नाम पर हम स्त्रियों को युद्ध में भेज तो सकते हैं, परन्तु पुरुषों के पास बच्चे नहीं होंगे। पुरुषों या स्त्रियों के पक्ष में प्राकृतिक या सामाजिक अन्तर हर बात में काम नहीं करते। उदाहरण के लिए मनोवैज्ञानिक दबाव के कारण हो या शारीरिक कमज़ोरी के, पुरुषों की मृत्यु स्त्रियों की अपेक्षा जल्दी होती है। समाज और प्रकृति विभिन्न और असमान ढंगों से पुरुषों और स्त्रियों पर बोझ लाधते हैं। ''नर नारी के बीच लड़ाई'' के लिए इन असमानताओं को अधार बनाना मूर्खता है।

कोई कानून या जन-जागृति उन बोझों को खत्म नहीं कर सकती जो पुरुषों के रूप में पुरुषों पर या स्त्रियों के रूप में स्त्रियों पर होते हैं। एक-दूसरे के साथ और आस-पास के संसार के साथ सम्बन्ध में दोनों को निभाने के लिए अलग-अलग भूमिका दी गई है। आपसी सम्मान के संदर्भ में भावनात्मक और शारीरिक अन्तरों को स्वीकार करना ही वह मार्ग है जिसमें से पतरस ने अपने पाठकों को जाने का आग्रह किया।

भद्र और शांत मन की भीतरी सुन्दरता (3:1-4)

3:1-6 में पतरस ने पहले स्त्रियों को सम्बोधित किया और फिर 3:7 में पुरुषों को। इसमें असमानता स्पष्ट दिखाई देती है, परन्तु यह निर्णय करना आसान नहीं है कि इस असमानता में किसका पक्ष लिया गया है। यदि हम परमेश्वर की आज्ञाओं को रुकावट डालने वाली और कष्टदायक मानना चाहते हैं तो सम्भवतया हम यही निष्कर्ष निकालेंगे कि पतरस की टिप्पणियां पुरुषों के पक्ष में पहले से उसके मन में थी। दूसरी ओर यदि हम पवित्र शास्त्र को उन लोगों के लाभ के लिए जिन्हें सम्बोधित किया गया है पवित्र आत्मा के द्वारा दी गई ईश्वरीय सलाह समझते हैं, तो हो सकता है कि हम निष्कर्ष निकालें कि पतरस स्त्रियों के पक्ष में था। स्त्रियों के लिए उसके निर्देश को चार विषयों की बात करने के रूप में संक्षिप्त किया जा सकता है।

अधीनता

पतरस ने आरम्भ किया, ''हे पत्नियो, तुम भी अपने पति के आधीन रहो ...'' (3:1)। इससे पहले पतरस ने इन मसीही लोगों को मानवीय अधिकार के अधीन रहने का आग्रह किया था

(2:13) और सेवकों को उसने अपने स्वामियों के अधीन रहने का आग्रह किया था (2:18)। ''तुम भी'' वाक्यांश पिछली आयतों और स्त्रियों को दी गई इस ताड़ना के बीच विचार के आगे बढ़ने की ओर ध्यान दिलाता है। अधीनता जीवन एक भाग है। किसी भी प्रयास में यदि एक से अधिक लोग शामिल हैं तो उनमें से किसी न किसी का इंचार्ज बनना आवश्यक है। जिसे अधिकार दिया गया है, हो सकता है कि वह सबसे बेहतर व्यक्ति हो या न, किसी दिशा की ओर न बढ़ने से बेहतर है कि दूसरे या तीसरे सबसे बेहतर व्यक्ति को इंचार्ज बना दिया जाए।

अधीनता के बिना अधिकार का अस्तित्व नहीं होगा। पतरस के शब्दों से यह लगता है कि पत्नी अपनी पसन्द चुन सकती है कि वह अधीन होगी या नहीं। मैं ऐसे कुछ परिवारों को जानता हूं जिनमें पत्नी के पास ऐसा कोई विकल्प नहीं होता। या तो वह अपने पति की अधीनता को मान लेती है या वह उसे अदालत में ले जाती है। जिस पति की पत्नी स्वेच्छा से उसके अधीन रहती है वह कितना ही आशीषित है। पत्नियों से ''अधीन होने'' को कहकर पतरस कह रहा था कि ''अपने पति को अपने परिवार का अगुआ बनने दो।'' मसीही व्यक्ति के लिए अपने परिवार का मुखिया बन पाना कठिन होगा यदि उसकी पत्नी ने यह सोच लिया है कि वह उसे नहीं बनने देगी।

सरकारों के हो या स्वामियों के या पतियों के, अधीन होने का अर्थ दी गई बातों के अनुसार भूमिका को स्वीकार करना है। किसी के मूल्य, योग्यता या समझ का मूल्यांकन करना बहुत दूर की बात है। पतरस ने कहा कि पत्नी को अपने पति के अधीन होना चाहिए। माना यह गया है कि पति मसीही नहीं है। जैसे मसीही लोगों के अच्छे कार्य और अधीन होने वाला व्यवहार अन्यजातियों में परमेश्वर की महिमा का कारण बनता है (2:12) और अज्ञानता को खामोश कर देता है (2:15) वैसे ही मसीह में अपने पतियों को मसीह में लाने के लिए पत्नियों के अधीनता वाले व्यवहार का बहुत प्रभाव होगा। यह स्पष्टतया आज की तरह ही पतरस के पाठकों में भी सत्य था कि स्त्रियां पुरुषों की अपेक्षा परमेश्वर के प्रेम और अनुग्रह के संदेश को ग्रहण करने के लिए अपने मनों को जल्दी खोलती थीं। कोई संदेह नहीं कि बहुत से पुरुष स्वर्ग में अनन्तकाल का आनन्द इसलिए लेंगे क्योंकि उन्होंने अपनी पत्नियों के अधीनता के व्यवहार में मसीही जीवन के फलों को देखा।

शुद्धता

अपने पतियों पर पत्नियों के प्रभाव का विवरण 3:2 में मिलता है: ''तौभी तुम्हारे भय सहित पवित्र चाल-चलन को देखकर।'' पतरस उस ढंग का विवरण दे रहा था, जिससे इन पत्नियों का जीवन होना था। NIV बाइबल में लिखा है, ''जब वे तुम्हारे जीवनों की ... शुद्धता को देखते हैं।'' शुद्धता का जीवन ऐसा है जो अशिष्ट या अनुचित व्यवहार के किसी भी सुझाव से मुक्त है। शायद यह पक्षपाती है, परन्तु पुरुष उन स्त्रियों से जिनसे वह प्रेम रखते हैं, भलाई के ऊंचे से ऊंचे मापदण्डों की अपेक्षा करते हैं। अपनी पत्नियों, माताओं और बहनों में वे वही सदगुण और शुद्धता देखना चाहते हैं। चाहें तो आप इसे पुरुष की अन्ध भक्ति कह सकते हैं परन्तु यह एक तथ्य है कि पुरुष उसी स्त्री का सम्मान करते हैं जो अपना लगाव और निकटता उस एक व्यक्ति के लिए सुरक्षित रखती है जो उसके जीवन में है।

यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो में मानविकी के प्रोफेसर एलन ब्लूम ने कुछ वर्ष पूर्व अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में एक खोजपूर्ण टिप्पणी दी है:

> यह अजीब बात है कि थके से थके और मूर्ख से मूर्ख माताओं और पिताओं ने अपनी बेटियों को सिखाया है-''वह तुम्हारा आदर या तुमसे शादी नहीं करेगा यदि तुम उसे उसकी मनपसन्द की चीज़ आसानी से दे दोगी''-वर्तमान स्थिति का सबसे सत्य और खोजपूर्ण विशलेषण बन गया है।[1]

यह ''थकी हुई और मूर्ख'' शिक्षा थी या नहीं इस पर सवाल हो सकता है। दिलचस्प बात यह समझ है कि जब स्त्रियां शुद्ध जीवन जीने में नाकाम रहती हैं तो उन्हें पछताना पड़ता है। पत्नी को अपने पति से आदर और प्रशंसा तभी मिलेगी यदि उसका जीवन शुद्ध हो।

भय

एक पत्नी का पवित्र चाल-चलन अविश्वासी पति को मसीह में ला सकता है। आयत 2 में यूनानी शब्द का अनुवाद ''भय'' (''reverence,'' NIV) का मूल अर्थ ''डर'' है, परन्तु यह भय और अधीनता से परमेश्वर के सामने खड़े होना है। भय पत्नी का वह गुण नहीं है जिसे जब उसका मन चाहे चालू कर दे और जब चाहे बन्द कर दे। जब वह रविवार को अपने कपड़ों के साथ अलमारी में दयालुता, परिश्रम और विचारशीलता को लटका देती है तो भय की उसकी कमी एक मुद्दा बन जाती है। परमेश्वर का भय व्यक्तिगत था सार्वजनिक जीवन में पत्नी द्वारा दिखाई जाने वाली भाषा, भक्ति, प्रार्थना और मसीही उदारता की सराहना करेगा।

भीतरी सुन्दरता

पतरस यह लिखते हुए ''तुम्हारा सिंगार दिखावटी न हो, अर्थात बाल गूंथने, और सोने के गहने, या भांति-भांति के कपड़े पहिनना'' (3:3) यह सिफ़ारिश नहीं कर रहा था कि वह कभी बाल न बनाएं या गहने न पहनें। वह स्त्रियों को उचित संतुलन और परिप्रेक्ष्य के लिए कह रहा था। साफ़ सुथरे और आकर्षक होने की उम्मीद की जाती है। परन्तु कपड़े पहनने, गहने और ''बाल गूंथने'' के लिए ''शालीनता और दीन मन का अविनाशी गुण'' नज़रअन्दाज़ करने का अर्थ आत्महत्या होगा। अपने पति के लिए आकर्षक के अपने ढंग से पत्नी बहुत कुछ कह देती है। यदि उसका आकर्षण केवल शारीरिक है, तो वह उसका मन प्रभु की ओर नहीं ला पाएगी। मसीह समान उसका व्यवहार, उसकी कोमलता और उसकी दीनता, भय और शुद्धता ही है, जो अन्त तक काम करेगी।

हमें यह समझने में सावधानी बरतनी होगी कि पतरस पति के मसीह के आज्ञापालन की ज़िम्मेदारी उसकी पत्नी के कंधों पर नहीं डाल रहा था। कई पुरुष इतने दुष्ट होते हैं, और अन्य इतने उदासीन कि उनकी पत्नियां चाहे कुछ भी कर लें वह उन्हें नहीं बदल सकतीं। पतरस पत्नियों को ज़िम्मेदार नहीं ठहरा रहा था। वह यह कह रहा था कि विवेकी और भक्त स्त्री चाहेगी कि वह अपना विश्वास और अपनी आशा अपने पति को भी बताए। उसने इसी कारण से यह निर्देश दिया।

पतरस ने स्त्री को अच्छे निर्णय, धैर्य से सहने और भलाई में असाधारण होने को कहा। एक बुद्धिमान और सहायक पत्नी के विवेक, अच्छे निर्णय और विचारवान होने की प्रशंसा करने वाला पतरस अकेला नहीं था। अलग्ज़ैंडर पोप ने लिखा है:

> वह जो अपने पति के शांत होने तक कभी जवाब नहीं देती,
> या, यदि वह उस पर हुक्म चलाती है, तो कभी दिखाती नहीं है कि उसकी चलती है;
> बात मानकर, अधीनता स्वीकार करके, झुककर मन भावती है,
> बात मानकर, उसके चेहरे की मुस्कुराहट और बढ़ जाती है।

उसकी भावना शायद पतरस की भावना से अधिक हटकर नहीं थी।

कालांतर की भक्त स्त्रियों के उदाहरण (3:5, 6)

पतरस को उदाहरण की सामर्थ का पता था। रूखे स्वामियों के दुर्व्यवहार और गाली-गलौज से खीजने की परीक्षा में पड़े दासों को निर्देश देते हुए उसने मसीह के नमूने की ओर ध्यान दिलाया। प्रभु ने अन्याय को सहा था। जिस प्रकार पतरस के द्वारा प्रभु के उदाहरण से दासों को निर्देश मिला वैसे ही बीते समय की पवित्र स्त्रियों से भी। पतरस ने उनके विषय में कहा कि वे अपने आपको मन की दीनता और नम्रता से सजातीं, परमेश्वर में आशा रखती थीं और इस प्रकार उन्होंने अपने आप को बहुत सुन्दर बना लिया था। इसके विपरीत उसने कहा कि उन्होंने गहने पहनने, वस्त्र पहनने और बाल गूंथने में अपनी सुन्दरता को नहीं देखा था।

वास्तव में भक्त स्त्रियों के बारे में बाइबल बहुत कुछ कहती है। सारा, रिबका, लिआ, और राखेल अपने पतियों के घुमक्कड़ जीवनों में उनके साथ थीं और उनके साथ परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर भरोसा रखती थीं। कुछ लोग KJV में इब्रानियों 11:11 की भावना से बहस करते हैं, चाहे अन्य अनुवादों में वचन से जुड़ी अलग अलग समस्याएं खड़ी होती हैं: ''विश्वास से ही सारा ने गर्भधारण करने की सामर्थ पाई, और उम्र बीत जाने पर बच्चे को जन्म दिया, क्योंकि उसने प्रतिज्ञा करने वाले को विश्वासयोग्य पाया।'' सारा के बाद, रिबका ने प्रतिज्ञा की हुई संतान के लिए याकूब का समर्थन किया। बाद में याकूब की पत्नियों ने अपने पिता से बढ़कर अपने पति का समर्थन किया जब इस पुरखा ने उनके जन्म की भूमि को छोड़कर कनान को जाने का निर्णय लिया (उत्पत्ति 31:14-17)।

मूसा की बहन मरियम हारून के साथ मिस्र से इस्राएल के निकलने के समय अगुआ थी। यरीहो की वेश्या रहाब ने जासूसों के कनान में प्रवेश करने पर इस्राएल की सहायता की। उसका नाम विश्वासी लोगों की सूची में ही नहीं (इब्रानियों 11:31) बल्कि प्रभु की वंशावली में भी पाया जाता है (मत्ती 1:5)। न्यायियों में दबोरा सबसे उत्कृष्ठ लोगों में से थी। न्यायियों 5 में उसका गीत पुराने नियम के इतिहास में सबसे सुन्दर विवरणों में से एक था। रूत और नाओमी का प्रेम और समर्पण, अबिगैल की समझ और बुद्धि (1 शमूएल 25) एस्तेर का साहस और विश्वास सब पुराने नियम में अपने लोगों के साथ परमेश्वर के व्यवहार की कहानी का भाग है।

विश्वासी और समर्पित स्त्रियों की कहानी पुराने नियम के साथ ही खत्म नहीं होती। मरियम और एलिशबा से दोरकास और प्रिसकिल्ला, नये नियम में भक्त स्त्रियों के विश्वास और काम

जारी रहते हैं। विश्वासी लोगों का शक्तिशाली दल ही था जिसे पतरस ने यह कहते हुए मसीही पत्नियों के सामने उठाया, ''पूर्वकाल में पवित्र स्त्रियां भी, जो परमेश्वर पर आशा रखती थीं, अपने आपको इसी रीति से सवांरती'' थीं (3:5)।

अपने पतियों के प्रति समर्पण इन पवित्र स्त्रियों की विश्वासयेाग्यता का एक भाग था। बिना दाम के अधीन होने से इसका मोल कम नहीं हो जाता। सारा तो यहां तक बढ़ गई कि वह अपने पति को आदर से बुलाती थी। जब मसीही स्त्रियां अपने पतियों के अधीन होती हैं, तो वे सारा जैसे विश्वास से उसकी आत्मिक पुत्रियां बन जाती हैं।

विचार करने और सम्मान का पौरुष (3:7)

सही ढंग से इस्तेमाल होने पर बाइबल का निर्देश पाठक के मन को टटोलकर उसके जीवन को बदल डालेगा। तब कोई किसी को नीचा दिखाने और दोष लगाने के लिए वचन का काम करता है तो वह बुरी तरह से बहुत दूर चला जाता है। हाल ही में मैं एक बाइबल क्लास में था, जिसमें चर्चा का विषय याकूब 2 पर और सम्बन्ध, विश्वास तथा कामों पर आधारित था। क्लास की एक सदस्य ने कलीसिया के उस सहायता को प्रदान न कर पाने पर इसे डांटने के लिए कई मिनट ले लिए जो उसे लगता था कि दी जानी चाहिए थी। मैं उस स्थिति के बारे में कुछ जानता था। वास्तव में दयालु लोगों ने काफ़ी सहायता और प्रयास किया था, जिसके लिए उन्हें बुरा भला भी कहा गया और किसी ने उनकी तारीफ़ नहीं की। कलीसिया नाकाम भी हो जाए (जैसे कि कई बार होता है, मनुष्यों द्वारा बनी होने के कारण) बाइबल की शिक्षा का उद्देश्य दोष लगाना नहीं है। हम में से हर एक को इसे अपने लिए लागू करना चाहिए। प्रश्न यह नहीं है कि ''मुझे किसने नाकाम किया?'' बल्कि यह है कि ''मैं कहां नाकाम हुआ हूं, और प्रभु के कार्य में और उपयोगी सेवक बनने में यह वचन मेरी सहायता के लिए मुझे कैसे पहुंचा सकता है?''

पतियों और पत्नियों को स्वयं की जांच वाले मन के साथ 3:1-7 पढ़ना चाहिए। पत्नी के लिए पढ़ा जाने वाला भाग 3:1-6 है जिसमें वह पूछ सकती है कि वह प्रेरित के निर्देश का पालन करके और भक्तिपूर्ण जीवन कैसे बिता सकती है। पति के लिए पढ़ने वाला भाग 3:7 है जिसे पढ़कर वह अपने आपसे पूछ सकता है कि क्या उसके कार्य प्रेरित की बात से मेल खाते हैं जो उसने पतियों को करने के लिए कहा है। यदि वह पहली आयतों का इस्तेमाल अपनी पत्नी को डांटने के लिए करता है या यदि उसकी पत्नी आयत 7 का इस्तेमाल यह साबित करने के लिए करती है कि वास्तविक समस्या उसका पति है तो इस वचन का दुरुपयोग हो चुका है। आखिर वह अच्छा पति कैसे हो सकता है जब उसकी पत्नी इतनी कठिन हो, और वह अच्छी पत्नी कैसे हो सकती है जब उसे ऐसे अप्रिय व्यक्ति के साथ रहना पड़ रहा हो? ऐसी चालाकियों का इस्तेमाल करना इस बात को सुनिश्चित करता है कि इसमें से किसी को कुछ लाभ नहीं।

पति के अपनी पत्नी के साथ व्यवहार के ढंग पर प्रेरित के निर्देश को तीन व्यवहारों से संक्षिप्त किया जा सकता है। यह सत्य है कि पौलुस ने पति के कर्तव्यों के लिए केवल एक छोटा सा भाग लिया है, परन्तु वह वैसा ही पति है जो वहां दिए गए गुणों वाला पति हो सकता है।

समझना

मुझे स्थानीय पुस्तकों की दुकान में पुस्तकें ढूंढ़ना अच्छा लगता है। कई बार मैं ''मनोविज्ञान'' वाले भाग में चला जाता हूं जिसमें विवाह और परिवार के सम्बन्धों पर पुस्तकें होती हैं। हैरानी की बात है कि ऐसी कितनी पुस्तकें प्रिंट हो चुकी हैं। सफलता के लिए हर किसी का अपना फार्मूला है। दर्जनों प्रकाशनों द्वारा सैक्स पर पुस्तकें छापी जाती हैं और सम्भवतया उनकी बिक्री सबसे अधिक होती हैं। इन सब पुस्तकों, सेमिनारों, जागरूक करने वाली कांफ्रैन्सों के बावजूद एक स्थिर, पारस्परिक संतुष्टि देने वाला परिवार बनाने की परिपक्वता तथा समझ इतने कम लोगों को क्यों है? मैं बताता हूं कि नाकाम रहने वाले अधिकतर दम्पत्तियों में मुझे कौन सी बात की कमी लगती है। मुझे जिस बात की कमी लगती है वह है समझ। समझ के लिए सभी सम्भव छोटी-छोटी बातों को शामिल करने का कोई फार्मूला नहीं है।

संक्षेप में एक पति के लिए अपनी पत्नी को समझने का अर्थ है: ''जो तुम चाहते हो कि वह तुम्हारे लिए करे वही तुम उसके लिए करो।'' समझने का अर्थ जन्मदिन को याद रखना, फूल देना, कूड़ा फैंककर आना शिकायत सुनना, गलती को नज़रअन्दाज़ करना, अन्तिम बार हार मानने पर हार मानना, घर के कामकाज में सहायता करना और हज़ारों अन्य बातें। समझने का अर्थ कई बार उसकी इच्छा के आगे समर्पण करना भी हो सकता है।

आदर

कई अवसरों पर मिले इरानोर्थ को उन व्यवहारों को बात करते सुना है जिनसे मज़बूत घर बनते हैं। वह कुछ इस प्रकार कहता है: ''हे पिताओ, क्या आप जानते हैं कि अपने नन्हें लड़कों और लड़कियों को आप सबसे कीमती उपहार क्या दे सकते हैं? उनकी मां से प्रेम करो! उससे अपने पूरे मन से प्रेम करो!'' मैं मानता हूं कि वह सही था। जिससे आप प्रेम करते हैं और जिसे आप केवल शारीरिक रूप से चाहते हैं उसमें एक बात का अन्तर हो सकता है कि जिससे आप प्रेम करते हैं आप उसका आदर भी करेंगे। पत्नी का आदर करने का अर्थ उसके विचारों को महत्व देना और उसकी सलाह मांगना है। जब उसे बताए जाने की आवश्यकता हो कि वह अच्छी, भली और दयालु स्त्री है तो उसके कार्य और समर्थन की सराहना करना आवश्यक है। पत्नी का आदर करने का अर्थ उसके साथ वित्तीय योजना बनाकर काम करना, जब आपको देर रात तक काम करना पड़े तो उसे सूचित करना और एक विश्वासपात्र के रूप में उसके साथ बांटना। आदरयोग्य होने का अर्थ विचारवान और दयालु होना है।

सहभागिता

पतरस ने कहा कि पति अपनी पति के साथ सहभागी (''पात्र,'' आयत 7) के रूप में और ''अनुग्रह के जीवन'' में साझी वारिस के रूप में व्यवहार करें। यदि मैं गलत नहीं हूं, तो ''सहभागी'' (NIV) शब्द इस संदर्भ में मित्रता के विचार को शामिल करता है। सहभागी लोग मित्र भी होते हैं। यह सत्य है कि सहभागियों में जिम्मेदारियां और समर्थन एक दूसरे को बांटा जाता है। यह सत्य है कि उनकी समृद्ध और उनके कठिन समय दोनों पर एक समान आते हैं। सहभागिता को सहने से स्पष्ट और कोई बात नहीं हो सकती, चाहे उस ढंग से बढ़कर है

जिसमें यह घनिष्ट और अन्त तक चलने वाली मित्रता को बनाता है। पत्नियों को अपने पतियों से सहभागियों की तरह व्यवहार करना चाहिए।

यह आश्चर्य की बात है कि पतरस ने "सैक्स" शब्द का एक बार भी इस्तेमाल किए बिना मज़बूत और स्थाई शादी तथा घरों को बनाने की ऐसी ठोस सलाह दी है। पति और पत्नी के बीच शारीरिक सम्बन्ध आवश्यक हैं, परन्तु स्पष्टतया पतरस ने इसे मेहराबदार उपदेशों की घेराबन्दी के रूप में देखा, जो उसने मसीही पतियों और पत्नियों को दिया।

सारांश

यदि समाज को चूर-चूर होने से बचाना है जिसमें हर कोई लालसा से अपनी ही इच्छाओं को पूरा करने के पीछे पड़ा है, तो परमेश्वर के लोगों के लिए उन्हें रास्ता दिखाना आवश्यक है। स्थाई और प्रगतिशील समाज का आरम्भ समझ और आदर पर आधारित सुरक्षित परिवारों का बनना है। हाल ही के वर्षों में हमने परिवार के समर्थन पर काफ़ी बातें सुनी थीं, परन्तु विवेकशील समाज की सहनशक्ति से बढ़कर इसे कमज़ोर करने का प्रयास अधिक देखा है। वास्तव में, तलाक की दर कम नहीं हुई, माता या पिता के साथ अकेले रहने वाले बच्चों की संख्या कम नहीं हुई है, और पति पत्नी को परामर्श देने वाले केन्द्रों में ग्राहकों की कमी नहीं हुई है। बीसवीं सदी में परिवार पर अत्याधिक दबाव पड़ा है। जब सुखवादी व्यक्तिवाद की खातिर इसकी सुरक्षा और घनिष्ठता खतरे में है, तो केवल हैरान ही हो सकते हैं कि कल को क्या होगा। मसीही लोगों को दी गई पतरस की अगुवाई के पारस्परिक के मूल नियम हैं।

टिप्पणी

[1]ऐलन ब्लूम, *द क्ला।जिंग ऑफ़ द अम।रिकन माइंड* (न्यू यॉर्क: साइमन एण्ड शुस्तर, 1987), 132.